मोहन राकेश (सन् 1925-1972)

हिन्दी साहित्य में नई कहानी के प्रमुख स्तंभ मोहन राकेश ने कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध, यात्रावृत्तान्त, जीवनी, बाल साहित्य आदि गद्य की लगभग सभी विधाओं में साहित्य लिखा हैं। उनका जन्म अमृतसर में सन् 1925 में हुआ। उनका वास्तविक नाम मदन मोहन गुगलानी था। परिवार के साहित्यिक परिवेश में मोहन राकेश की रूचि साहित्य के प्रति बचपन से ही हो गई थी। लेकिन सोलह वर्ष की आयु मे ही पिता को खोकर जीवन के कठोर यथार्थ का सामना करना पड़ा।

मोहन राकेश ने लगभग पचास कहानियां लिखी, उनकी चर्चित कृतियों में –

उपन्यास–'अंधेरे बंद कमरे', 'अंतराल', 'न आने वाला कल'।

कहानी–'इन्सान के खण्डहर', 'नए बादल', 'जानवर और जानवर', 'फौलाद का आकाश' 'आज के साए', 'रोये रेशे', एक-एक दुनिया, मिले जुले चेहरे। उनके देहान्त के बाद कमलेश्वर ने अप्रकाशित कहानियों को 'एक घटना' शीर्षक से प्रकाशित करवाया।

नाटक–'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस', 'आधे-अधूरे'। 'एक अधूरा नाटक' तथा 'पैरों तले की जमीन मरणोपरान्त प्रकाशित हुए।

एकांकी–'अंडे के छिलके।'

यात्रा वृतान्त– 'आखिरी चटटान'।

जीवनी– 'समय सारथि'।

निबन्ध– 'बकलम खुद', 'परिवेश'।

बाल साहित्य– 'बिना हाड मांस के आदमी'।

मोहन राकेश के काव्य साहित्य का क्षेत्र प्राय: मध्यवर्गीय समाज रहा है। इस समाज की कुंठाएं, महत्वाकांक्षाएं, आडम्बर, मिथ्या प्रदर्शन, तनाव, संत्रास उनकी कहानियों में स्पष्ट रूप से उभरकर आया है। आज के परिवार की टूटन और चुके हुए सम्बन्धों को उन्होंने सशक्त वाणी दी है। कहानियों के पात्र इसी वर्ग के हैं, जो सहज ही पाठको से तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं। राकेश, चूंकि स्वयं मध्यवर्गीय समाज से आए थे, अत: उनके कथ्य प्रामाणिक अनुभवों पर आधारित थे। इसीलिए वे केवल कहानियां न रहकर जीवन के प्रामाणिक दस्तावेज बन गए। वैसे भी मोहन राकेश साहित्य को जीवन के प्रति प्रतिबद्ध मानते हैं। उनका कहना है कि "मैं तो

Scanned with CamScanner

पिछले वर्षों में मैंने कहानी के अतिरिक्त नाटक और निबन्ध भी लिखे हैं, परन्तु किसी भी स्थिति को ठीक से पकड़ पाने या अभिव्यक्त कर पाने का जो सन्तोष मुझे कहानी लिखकर मिलता है, वह दूसरी रचनाओं में नहीं मिलता।"

मोहन राकेश की कहानियां जीवन के बदलते परिवेश की प्रक्रिया की प्रतिक्रिया हैं। इसीलिए सम्बन्धों के विघटन के कारण व्यक्ति के टूटते आभ्यान्तर यथार्थ का चित्रण उनकी कहानियों का मूल स्वर रहा है। संक्रान्ति काल के तनाव, संत्रास और दबावों के अन्तर्गत नागरिक जीवन की विद्रूपताएं, समस्याएं, द्वन्द्व आदि स्पष्ट रूप से उभरकर आए हैं। इस काल में भारत विभाजन एक मुख्य घटना थी, जो समय के साथ निरन्तर बीभत्स होती चली गई। जीवन की अस्मिता पर अनेक प्रश्न उभरने लगे। जीवन मूल्यों की जमीन दरकने लगी और उसकी प्रतिध्वनि जीवन में सुनाई देने लगी। राकेश का साहित्य युग की पारिवेशिक समग्रता को स्वयं में समेटे समाज और व्यक्ति के बदलते स्वरों को अभिव्यक्ति देता है।

राकेश जितने अपने कथ्य के प्रति सचेत थे उतने ही शिल्प के प्रति जागरूक थे। वे कहानी की मुख्य धारा में निरन्तर नए सन्दर्भ और सामाजिक चेतना के नए संकेत खोजते रहे। उनके पास ऐसी समर्थ भाषा थी, जिसने जीवन्त प्रतीक, बिम्ब संकेतों के द्वारा जीवन के आत्मीय चित्र प्रस्तुत किए। राकेश मानते थे कि भाषा की वास्तविक शक्ति शब्दों के कोशगत अर्थ से कहीं व्यापक हैं, जो न व्याकरण में मिलती हैं और न भाषाशास्त्रियों की दौड़ धूप से। भाषा जीवन के भीतर से झरने की तरह उफनती है। इसीलिए उनकी भाषा में शिल्प का एक खुला और नया आकाश दिखाई देता है।

पाठ सारांश

मोहन राकेश की कहानियाँ जीवन से जुड़ी हैं। सम्बन्धें के विघटन को इसमें दिखाया गया है। व्यक्ति के अन्दर के यथार्थ को उजागर किया गया है। राकेश कथ्य के प्रति सचेत हैं। वे सामाजिक चेतना के नये आयाम खोजते हैं। मलबे का मालिक भारत विभाजन के कारण मानवीय सम्बन्धों में आई दरार की कहानी है। जिसे अविभाजित भारत के सदियों तक सँजोकर रखा है। साथ साथ रहने वाले पड़ोसी एक-दूसरे के जान के दुश्मन हो जाते हैं। बूढ़े गनी का परिवार हिन्दू पड़ोसियों के बीच सौहार्दपूर्ण जीवन जी रहा था, विभाजन के बाद रानी का बेटा चिरागदीन और उसका परिवार पाकिस्तान नहीं गया लेकिन साम्प्रदायिक सद्भाव बिगड़ने पर उसे अनेक कष्ट सहने पड़ते हैं। व्यक्ति में छिड़ी हिंसा, स्वार्थ अपने नग्न रूप में आ खड़े होते हैं। इन सबके बीच मानवता सिसकती रहती है।

Scanned with CamScanner